UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180971
UNIVERSAL
LIBRARY

H81.6
C55P.
H2352.
पुकन्दर Mr
पैरोडयावली 1945
30/8/56 P453

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81.6 C55P. Accession No. H 23352

Author पुणतांबेकर Mr.

Title पैरोड्या वगैरे. 1945.

This book should be returned on or before the date last marked below.

30/8/86

पैरोड्यावली

लेखक
मिस्टर चुक्कन्दर

प्रकाशक
शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी
पुस्तक प्रकाशक व विक्रेता
आगरा

['श्रीमती बनाम श्रीमता' के प्रबन्ध-निर्वाह के साथ चुकन्दर
की बहुत-सी पैरोडी उसमें प्रकाशित हो चुकी हैं। कुछ
सामयिक पैरोडी एवं तुकबन्दी सन् १९४५ से
कुछ पत्रों में छपती रही हैं जिनका संक
लन यहाँ किया जाता है।]

मूल्य ।।।)

समर्पण

स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं, धारासभाओं, और विधान-
निर्मात्री परिषद् में जो बड़े-बड़े हाथ वाले केवल
हाथ उठाने को ही बैठाए जाते हैं और जो बिना
ठीक-ठीक सोचे-समझे, इशारा होते ही हाथ
ऊपर कर दिया करते हैं; उन्हीं हाथ
वालों के बड़े-बड़े हाथों में यह तुच्छ
तुकबन्दी अत्यन्त श्रद्धा और
भक्ति के साथ समर्पित
की जाती
है।

जल में जब बूड़न लगौ; दल में चाहौ नाम;
दोनों हाथ उठाइयो, यही सयानो काम॥

भूमिका

रीति-काल-नाटक को जीवन अनुकूल बना;
निशि रँग-रेली दिखलाईं दुपहरियाँ
पढ़ के पुराने कवियों के नाना छन्द बन्द
माडरन फैशन में सजाईं वृद्ध परियाँ
एक पद यहाँ का और दूसरा वहाँ का लेके,
काट छाँट करके भावना की सहचरियाँ
हास्य-रस-रेल के उछल कूद चलने को
डालीं कुछ व्यङ्ग की यह टेढ़ी-सी पटरियाँ !!

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—समर्पण	...	...	
२—भूमिका	...	...	
३—वन्दना	...	...	१
४—उपालंभ	...	...	३
५—ज्योतिष की विदाई	...	...	५
६—कवित्त व सवैये	...	...	
(१) अनाथों के नाथ	...	...	११
(२) गोपियों का उत्तर	...	...	१३
(३) बटोही को चेतावनी	...	...	१५
(४) पार्लमेंटरी डेलीगेशन आने पर		...	१६
(५) रूस के प्रति	...	...	१७
(६) जिन्ना से	...	...	१८
(७) आजाद मुस्लिम के उद्‌गार		...	१६
७ —क्या कहा कि यह घर मेरा है ?		...	२०

८—आधुनिक दोहावली २४
९—भैंस या गाय ? ३२
१०—कुण्डलियाँ ३३
११—परमिट प्रसङ्ग ३८
१२—एक कविता ४२
१३ चल रही उसकी कुदाली ४४
१४—मेरे कविवर मत मान करो ! ५१

वन्दना

ओम् जय खेलन हारे !
जगह-जगह हम प्यारे ! बुरी तरह हारे !!
ओम् जय०

सब से बड़े खिलाड़ी, तुम अन्तर्यामी !
'बल्ला', 'बाल', 'विकट' के, 'पिच' के हू स्वामी !!
जो खेलै जग माँहीं लै-लै फिर छिहसकी
देखि तुम्हारी छवि तहँ, शरण गहूँ किसकी ?
ओम् जय०

अनुपम प्रभु को फील्डिङ्ग, कप्तानी जानी।
प्रगतिशील 'बाउलिङ्ग' की नहिं जग में सानी ॥
विकटन को लुढ़कावत, छन-छन हैरानी।
लाट-बॉल की ताकत, सबने प्रभु मानी !!

नाना भाँति खिलावत, देखि देखि हारो
चक्र सुदर्शन त्यागो, कन्दुक कर धारो !

ओम् जय०

टैनिस में ले 'रैकट' उछल-कूद देवा !
मिक्स्ड-मैच' लखि लीला, भगत करें सेवा !
हाकी-गोलनि-कर्त्ता, फुटबालहिं भरता
मैं मूरख, तुम स्वामी, कन्धे पै धरता !!
तुम हो अलख-अगोचर, सबके प्राण-पती
खेलन में दिखलाई मानवीय प्रगती !!

ओम् जय०

जो खेलै फल पावै, कष्ट मिटै धन का
पत्रों में छपि आवै, फोटो जन-जन का
दीनबन्धु ! मैचनि में, तुम रक्षक मेरे
बल्ला मुफ्ति दिलाओ; चरण परूँ तेरे !!

ओम् जय०

उपालम्भ

: १ :

माधव ! आप सदा के कोरे !
पूजत हम सब निसदिन तुमको केवल बहुमत भोरे !
किन्तु नहीं निरवाचित प्रतिनिधि, एकु वोट नहिं पायो
लीडर-लीडर हू न बनिकें, दल में नाम लिखायो !
किती देर जनता के हित तुम 'सैंशर-मोशन' लाए ?
प्रश्न पूँछिबो आउत नाहीं; 'वाकाउट' न कराए !!
'काम-रोकि' प्रस्ताव न करिकें भाषण कबहूँ दीन्हो।
ब्यालिस में नहिं जेल पहुँचिकें, निज भारत कहुँ चीन्हो
भुवन-विदित प्रभु अब भारत में भूले हू जनि अइयो
नेति-नेति रटती स्रुति की मत कलई तुम खुलवइयो !!

: २ :

मोहन ! कब लौं मौन गहोगे ?
तार और बेतार बढ़ि रहे; कब तक दूरि रहोगे ?
पहुँचि रेडियो पै अब बोलो, नाहक खोजत फाँस
सुद्ध नागरी सुनिकें दैहैं कोटिन कोटि असीस
नैन मूँदि तुम अस कस सोए, भारत छिन-छिन छीजै
"पैंसिलीन" लै मलौ हृदय पै, कछु पाषान पसीजै
सोबत-सोबत किती बरस भईं, सोबत अजहुँ न हारे
जुद्ध बीति छूटे हैं बन्धन ते जग के सब कारे !
बिपदा बढ़ी किन्तु अब औरहु, टेरि टेरि हौं हारो
कान मूँदि तुमने कैसो यह नूतन प्रन अब धारो ?
लै घण्टाघर हिमगिरि पहुँचौं अति ऊँचौ बनवाऊँ
भरि "अलार्म" तब घनन-घनन मोटो घण्टा बजवाऊँ
फिर हू भनक परै नहिं कानन, नयन-नीर छलकावत
राष्ट्र-संघ में अरजी दैहौं, रचि-पचि रङ्ग रँगावत
अङ्ग-अङ्ग प्रभु ! तुम्हरे कटि हैं करियो मति कछु हाय
फिलिस्तीन सो करि बटबारो, लैहौं कान धराय !!

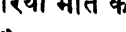

ज्योतिष की विदाई

[सुकन्दर को ज्योतिष का अभ्यास था। कई कारणों से सहसा ज्योतिष छोड़ कर साहित्य की शरण लेनी पड़ी। उसी समय यह पैरोडी श्री नवीन की "भाई कैसी कविता बविता" के आधार पर लिखी गई थी।]

भाई ! कैसी ज्योतिष भोतिष ?
ऐसी गड़बड़झाला में, सब व्यर्थ होगई कोशिश !
तुम हो बेटे बड़े बाप के, तुम माई के लाल !
तुम क्या जानो उलटी-सीधी, चालों के ये हाल ?
जिन चालों के भँवर चक्र ने, कर दी हुलिया तङ्ग !
कैसे में अब दिखला सकता, ज्योतिष के कुछ रङ्ग ?
बहुरुपिया, खुफिया, सैंसर, मक्कारों की यारी !
देख सभी की नेकनियत, ज्योतिष की हिम्मत हारी
ज्योतिष छोड़ अगर मैं करता, चक्रव्यूह की पूजा !
पग पग पर उन्नति मिलने में, होता और न दूजा ?

पर न स्वप्न में सोचा भी था, चीन देश सा भाग !
जिसको ज़रा बुरा बतलाओ, वही लगाता आग।
घर पर आता हाथ जोड़कर, करता यह फरमाइश !
बहुत बड़ा अधिकारी बनने की है मुझको ख्वाहिश।
शनि अरु मंगल बिगड़ रहे हैं, दे दो ऐसा मन्त्र !
मुझे छोड़ कर, और किसी के, पीछे हो षड्यन्त्र।
अनपढ़ और अशिक्षित समझो, हूं मैं पूरा ढोल !
बात बनाना मगर जानता, मिल जावे यदि पोल।
मेरे दादा पढ़े नहीं थे, हुए कमाण्डर भारी !
जोड़-जांड़ कर मैं भी अपनी कर लूँगा तैयारी।
कहने को कह सकता मैं हूं, आई०सी०एस फेल !
मेरे पड़दादा ने चलवाई थी पहली रेल।
स्वामि-भक्ति मैं दिखला सकता हृदय द्वार के खोल !
'जी हुजूर' बन सीखा ले लूँ, राशन औ' कण्ट्रोल ?
ऊँचा-ऊँचा वेतन पाकर, सजे सजाये क्वार्टर !
जलधि मध्य फिकवा दूँगा, फिर मैं अटलाण्टिक चार्टर ?
युद्धकाल में सदा चाहिये, नव ग्रह का अनुराग !
एक साथ जग उठे अभी, आ ज्वाला जैसे भाग्य।
मङ्गल और शनिश्चर केवल, सीधे करदो, यार !
नहीं तुम्हारी ज्योतिष की विद्या को है धिक्कार।

एक गए दूसरे सुनाते, राहु केतु की बात!
अपनी करुण कहानी ही, रटते रहते दिन रात।
आसमान के तारे, इनके, बने सिद्धि के साधक!
एक मात्र इच्छा है इनकी, बनने को सम्पादक
सेठों को और रजवाड़ों को, देकर अच्छी धमकी
मूठ गरम करने को हिय में, नई लालसा चमकी!!
कहते प्रान्त कमेटी पहुँचूँ, अपनी धाक जमाऊँ
'दिल-प्लीडर' को 'लीडर' बनवा, उलटा नाच नचाऊँ
वर्गवाद का बिगुल बजाऊँ, साम्यवाद का डङ्का!
बलिदानों के समय, भले ही, भाग चलूँ मैं 'लङ्का'
राजनीति के नवशिशु पावें. उलझे 'चाभी-ताला'
छायावादी कवियों के ज्यों, पन्त-प्रसाद-निराला
सम्पादन - शैली अद्भुत हो, भारतीय लासानी
धर्म-मर्म को त्याग, रङ्ग हो, किञ्चित् 'पाकिस्तानी'
अन्धभक्त प्रतिनिधि यों. समझें, तारा मैं अति तुङ्ग!
इलाचन्द्र जोशी ज्यों देखे, 'फ्रायड एडलर जुङ्ग'
राहु केतु को किन्तु सुधारो, सखे, हमारा काज
नहीं, हमारे सपने दिल में, मिट जावेंगे आज
जाने कितने ऐसे सज्जन, आते हैं हर रोज
लालच देते, वादा करते, देने का वह भोज

दिन भर की सर दर्दी से—थक, पड़ता इनसे पाला।
किस्मत की ख़ूबी को देखो, किस चक्कर में डाला !!
ग्रह को ठीक न करने पर, बन जाते कट्टर दुश्मन !
व्यंग्य कसा करते हैं, ज्योतिष के विरुद्ध, वे क्षण-क्षण !!
लेख लिखाकर, नाटक रचते, क्रय-विक्रय की घातें !
वैज्ञानिक, उद्योगी बनकर, करें ज्ञान की बातें !!
नहीं योग्यता किसी काम की, उनका यही बहाना
उल्टी-सीधी हंसी उड़ाना, कैसा नया ज़माना ?
उन लोगों की पहुँच, अरे ! है, बहुत दूर तक भाई !
दाएँ बाएँ चलकर बनते, युग के चुगल जमाई !!
कैसे समझाऊँ सज्जन को, ज्योतिष नहीं शिकार ?
जिसमें नभ से नीचे लावें ग्रह को गोली मार
यदि होता थोड़ा भी, ऐसा कुछ भी तो आसार
गिरा-गिरा कर आसमान से, बाँधूँ जाल पसार
भारत-रक्षा के विधान से, धमकाता तत्काल,
गिरफ्तार करके नव ग्रह को, खुद लिखता इक़बाल
किसी किले में बन्द कराकर, मार-मार कर सण्टी !
भाग्य बदलवाने की लेता, मैं, पूरी गारण्टी
फिर भी वे यदि बात न मानें, दिखलाकर 'शू' 'बाटा',
रूसवेल्ट को लिखवा दूँ, यह "नान-परसना-ग्राटा"

अगर कदाचित् ज्योतिष होता, मेरे घर का घोड़ा
रास खींच काबू में लाता, मार-मर कर कोड़ा
सद्-अफ़सोस यही है ज्योतिष, हुआ न अरबी घोड़ा
'डर्बी रेस-कोर्स' में किस्मत ने अटकाये रोड़ा
लाखों कोसों की दूरी पर, वास्तव में ग्रह, भाई
इसीलिए, सच अमर जानने में, पड़ती कठिनाई
रेखा-गणित त्रिकोण-मिती का, कल्पित सब आधार
बार-बार इनकी उलझन हो, कर देती बेज़ार
ज्योतिष के अन्तर्गत विद्या, फिर भूगोल खगोल
ग्रह-गति अङ्कित करने में भी, लगे समय अनमोल
ऐसे जटिल गणित के ऊपर, तब ईश्वर की सत्ता
सीधा मार्ग न समझो जैसे, दिल्ली से कलकत्ता
तरह-तरह की कुण्डलियों से, लेनी पड़ती टक्कर
देख-देख इनको बन जाते, बिद्बद्वर घनचक्कर
फिर भी ज्योतिष संकट लाता, आफ़त का परकाला
इसे छोड़, अब पढ़ता रहता, 'बच्चन' की 'मधुशाला'
पीता जो है, अमरख्याम का, प्याला भर-भर हाला
चारुदत्त-शाकुन्तल-वर्णित, नव-कवि का 'मधु श्याला'
यार लोग सब यही समझते, हूं तिब्बत का लामा
पर मेरे उर समा रही है, श्रान्त गगन की 'यामा'

हिंदुस्तानी प्रेमी हूँ मैं, हिन्दी लगती सक्त
  सर-सप्रू-मत ठीक, हिन्द में उर्दू का कुछ रक्त
इसीलिए मिश्रित भाषा में, पिंगल तोड़-मरोड़
  भाव व्यक्त करता रहता मैं, ज्योतिष से मुख मोड़
'पोष्ट-वार' नवनिर्माणों में, 'इण्डस्ट्री' दरकार
  भारत के प्राचीन शास्त्र सब केवल गर्दभ-भार
नत-मस्तक करता प्रणाम हूँ, है यह अन्तिम दर्शन
  ज्योतिष की बातें मत पूछो, छूट गया आकर्षण
इस युग में, इस विद्या का, उत्थान नहीं संभाव्य
  समय विदाई, भेंट रूप, प्रेषित करता लघु काव्य
जब भविष्य बतलाने पर ही, मिल जाते हैं नोटिस !
तब फिर कैसा ज्योतिप झोतिप ? हाँ, तब, कैसा ज्योतिष झोतिष ?

अनाथों के नाथ

['नवीन सुदामा-चरित' से]

दोहा

कह्यो सुदामा एक दिन, कृष्ण हमारे मित्र !
रूस देस में बसि रहे, रहनि अतीव विचित्र !!

देस-देस में क्रान्ति को, बीड़ा अब उन लीन्ह !
देस बिमुख जो लोग सब, सुख सम्पति उन्ह दीन्ह !!

तिय बोली जिनके हितू, कम्यूनिस्ट-कुल-चन्द !
ते दारिद-संताप तें, क्यों न रहे निरद्वन्द !!

कहा जवाहिर में धर्यो, वृथा जेल के जोग !
जाइ मास्को ला धन, भोगहिं सब उपभोग !!

कवित्त —

लोचन कमल दुख मोचन तिलक भाल
औरनि के छीन मुकुट धारे निज माथ हैं
हिटलर, मुसलिनी, औ, रूसवेल्ट, चर्चिल,—
आँख मूँदि करि कें जिन मारे एक साथ हैं
चीन, जापान नङ्गा झोरी लै मरोरि डारे—
बरलिन सों कोरिया पसारे निज हाथ हैं
मामको के गए हरि दारिद हरेंगे पिय
मामको के नाथ वे अनाथन के नाथ हैं !!

गोपियों के उत्तर !!

[नवीन उद्धव-शतक से]

: १ :

कीजै देस-भक्ति को प्रचार गिरि-सृगन पै,
हिय में हमारे अब नेकु खटि है नहीं।
कहै 'रतनाकर' जे हँसिया हथौड़ा औंड़ि,
हाथ में 'तिरंगा झण्डा' आजु सटि है नहीं।
रसना हमारी चारु चातकी बनी है ऊधौ,
'लेनिन' बिहाइ और रट रटि है नहीं।
लौटि पौटि बात को बवण्डर बनावत क्यों ?
नैन तें हमारे अब रूस हटि है नहीं !!

: २ :

बिना रूस कौन गाय दुहैगो हमारी आजु
बिना रूस कौन नाचि थिरकि रिझाइ है?
कहै 'रतनाकर' बिना रूस कौन आजु
भूमि के बजाइ बेनु, जग को चराइ है?
कौन आजु रूपौ और सोनो बिना ही हाय
दीन देसबासिन की बिपति बराइ है?
रावरो अखंड देस, बिना दाम दएँ-लएँ,
ऊधौ कहौ कौन धौं हमारे काम आइ है?

बटोही को चेतावनी

ईरान बिचारी अब सासुरैं सिधारी;
औ चीन जापान पर लाग्यो मेघ झरु है!
तुर्की, यूनान, दोनौं, हाथ पर हाथ धरैं;
निसि अँधियारी जामें सूझत न करु है!!
सङ्ग में सहेली, बरतानिया अकेली, सोहू-
बूढ़ी अलबेली, जाको फूटि रह्यो घरु है!!
सोचि सोचि बात, मेरो जियरा डरात;
जागु जागु रे बटोही, 'कामरेडनु' को डरु है!!

पार्लमेण्टरी डेलीगेशन आने पर !!

इतिहास सोधि सोधि, देखि भूगोल सबै,
'हिन्दू' औ' 'अहिन्दू' को भेद को बताउते ?
काफिर कपूत ! करतूत कछु सोचो जरा !
कौन पाकिस्तान हू का चर्चा चलाउते ?
'बैनी' कवि कहै, मानो मानो रे प्रमान यही,
कोरे बचनन सों आस कौन उपजाउते ?
आरत जा भारत के कैसे जीव होते पार ?
पार्लमेंट चारे बार, बार जो न आउते !!

रूस के प्रति !!

कोरिया लौं तुम फैलि रहे,
अब पंख तुम्हारे कहाँ लग फैलि हैं ?
"दारेदनाल" को जाल बुन्यो,
अरु 'कुर्द' तुम्हारे कहाँ लौं सकेलि हैं
ठेलि हैं "अङ्कल सैम"[१] तुम्हैं,
उनको हम हाथन ही पर झेलि हैं
रूस जू मानों बुरो के भलो,
अँखि मूँदनो संग तिहारे न खेलि हैं ॥

१—'अंकल सैम' अमरीका को कहते हैं ।

जिन्ना से !!

यहि देस विभाजन सूधो नहीं,
तरबूज की तो यह फाँक नहीं
सब की सुनि कें सब की करिवो,
कछु भेड़-धसान की हाँक नहीं
धन ही धन माँगत जात चले;
रिन को कहुँ देत हौ आँक नहीं
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो जिन्हा
सब लेहु पै देहु छटाँक नहीं !!

आज़ाद मुस्लिम के उद्गार !!

भेस तजौं न तजौं नहिं जाति,
हिए न लजौं कहते अब कोई।
भावै न हिन्दुपनो हमकौं, अरु
हिन्दवी में सिगरी मति गोई॥
आन, इमान, जवान, रखौं निज,
चित्त बिचारि कहौ अब सोई।
जामैं रहै हमरी प्रभुता, अरु,
तोर पतिव्रत भङ्ग न होई॥

क्या कहा कि यह घर मेरा है ?

(फर्वरी १९४६)

क्या कहा कि यह घर मेरा है ?
ना मेरा है—ना तेरा है !
यह अँगरेजों का डेरा है !!
फिर, चिड़िया रैन बसेरा है !!

[१]

है लगा ठाठ कण्ट्रोलों का,
'राशन' का भी सज रहा साज;
'भारत-रक्षा' का कर हौआ,
अब 'आर्डिनेन्स' से चला राज !!

बैंकों में देखो चहल पहल !
धनिकों की दुनिया डोल उठी !

दस सहस, सहस, के नोटों की
गड्डी, मिट्टी बन, बोल उठी—
मत घर की याद दिलाओ तुम !
अब चारों ओर अँधेरा है !!
वाणी, सम्पति, गृह, अन्न, वसन–
इन सब पर आज लगा बन्धन !
'क़ानून' कहाँ पहुँचा ? जो यम का
भाई बना चचेरा है !!"
क्या कहा कि यह घर मेरा है ?

[२]

यह 'कम्यूनिस्ट' का ख्याल गलत
यह पाकिस्तानी देश नहीं !
हिन्दू भी मिट कर चला गया
फिर भारतीयता शेष नहीं !!
इण्डोनिशिया, इण्डोचयना,
फ़िलिपाइन, फ़िलिस्तीन, लंका
बर्मा, सिरिया, ईरान, मिस्र,
कह रहे बजाकर यह डंका
संयुक्त-राष्ट्र का संघ
कर रहा कुछ भी कहीं उजेरा है ?

यह बृहत्काय है 'यू० एन० ओ०'
जग-शान्ति-हेतु की कौंसिल जो

अपना मतलब हल करने को
गुट का गुट बना लुटेरा है !!"
क्या कहा कि यह घर मेरा है ?

[३]

'आज़ाद-हिन्द' बरबाद हुई !
नाशाद रही, नाकाम रही !!
कौंसिल-चुनाव में, गला फाड़,
अब स्वतन्त्रता की शान रही !!

हम बहक, बहक, बकझक करके
बन बैठे 'वादी' 'प्रतिवादी' !!
पैरों पर गिर 'सौरन्सन' के
शायद कुछ ले लें आज़ादी !!

बाहिर वालों के प्रतिनिधियों का
वही पुराना फेरा है !!
गृह-युद्ध करा जिनने बाँधा ;
मीठे बन, स्वार्थ सदा साधा !!
तूँबी के मीठे स्वर द्वारा--
फुसलाता सदा सपेरा है !!

क्यों कहते फिर घर मेरा है ?
ना मेरा है—ना तेरा है !
यह अँगरेज़ों का डेरा है !!
फिर चिड़िया रैन बसेरा है !!!

आधुनिक दोहावली

कोऊ कोटिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार
सब सम्पति अब जात है, नित प्रति ब्लैक बजार

छमा खंग लीन्है रहै, खल को कहा बसाइ
ब्लैक मारकट जात जो, पुलिस न पकरै ताइ

को कहि सकै बड़ेनसों, अब पलने मैं झूलि
आध पाव नित खाइकें, जाउ खुशी सों फूलि

राशन कार्डहिं सार है, इहि संसार असार
जियत, मरत, झुकि, झुकि, परत, जिहिं पावत इकबार

बिरहानल ब्याकुल भए, उमगै पीतम नेह
भाजत हैं भूपाल अब, गांधी नहरू गेह

बड़ बड़ नोटनि को गरब, कबहूँ करिए नांह
देखत ही मिटि जात हैं, आरडिनैन्स की छाँह

अपनी-अपनी गरज लै, आनँद सबको देइ
भूखा राशन कार्ड लै, नंगा परमिट लेइ

दूध दही घी छाँड़ि कैं, पेलि डण्ड मत भूलि
टमाटरन को खाइ तुम जाउ खुशी सों फूलि

अफ़सर ऐसो चाहिए, जैसौ वैद्य सुभाय
फीस-फीस तो गहि रहै, चूरन बाँटत जाय

मुँह को मीठो चाहिए, साहब के दरबार
मुँहफट पै तहँ परति है, 'सहजो' मोटी मार

इत उत दोनों ओर मिलि, चमगीदड़ बनि आय
या भव-पारावार कों, उलँघि पार सो जाय

जुड़ा जो देखन मैं चल्यो, जुड़ा न दीखा कोय
लियाकत जिन्ना कहत अस, 'हम सम जुड़ा न होय'

प्रोफ़ेसर 'डाक्टर' भए, तिरिया चहति इनाम !
अइहैं रोगी फीस लैं, घर में बढ़िहै दाम !!

धीर धरौ, रखि कें अजहुँ चटकीली मुख-ज्योति
समय परे की बात है, गीदड़ लीडर होत

औषधि-ज्ञान, निदान नहिं, चलत डाक्टरी नाहिं
'इंजकशन' की सुई अब, प्रतिपालति है ताहिं

कपि को अहै सुभाव यहि, तोरत फलन अनेक
'डैंटल सर्जन' पर गए, दाँत बचत नहिं एक

ड्याबिटीज़ ने अस करी, जस अरिहू न कराहिं
बड़े-बड़े मिष्टान्न सब, ठौर धरे रहि जाहिं

'रहिमन' आगाखान को, मत तोरौ छिटकाय
थूरुप को घुड़दौड़ में, मोद विनोद नसाय

'रहिमन' मनहिं लगाइ के, देखि लेहु किन कोय
पार्टी में बढ़िवो कहा, दाम पास में होय

'रहिमन' निज मन की व्यथा, मनहीं राखो गोय
हिन्दी के अखबार में, नहिं छपि जैहै सोय

'रहिमन' कहत जु हृदय सों, क्यों न भयो तू पेट ?
कविता रच भूँखो मरौ, बन मुस्टण्डा सेठ !!

देखौ चतुर बिचारि कै, साँची कहै जमाल
सुख, श्री, बैभव नहिं मिलै, खूब करौ हड़ताल

'रहिमन' लन्दन बसत अब देश-विदेश-नरेश !
बनोबास के काल में आवत ये यहि देस !!

'रहिमन' प्रीति सराहिए, मिले होत रँग दून
मिल-मालिक अफ़सर भए, डबल बढ़त है खून

नैन सलोने, अधर मधु, कौन घटै इन माँहि
अँधेरे को पूँछौ तनक, बड़ौ बतावत काहि

उर्दू हिन्दी मिलि रहै, 'हिन्दुस्तानी' नाम
दुबिधा में दोनों गए माया मिली न राम

सबै कहत बेंदी दिए, आंक दस गुनो होत
अङ्क पूर्व बेंदी लिखें, कितनो रहत उदोत !!

चले जाहु यहाँ को करै, हाथिन को व्यौपार
'जीप' बैठि अब लखहु तुम, अमरीकन त्यौनार

पत्रा ही तिथ पाइए, वा घर के चहुँ पास
छायो चिमनिन को धुआँ, ढक्यो भूमि-आकाश

पायँ महावर दैन को, नाइन बैठी आइ
जाबक को रँख देखि के, मौजा मीड़त जाइ

साईं का घर दूर है, जैसे पेड़ खजूर
भारत में जहँ तहँ दिखै, अरब देस भरपूर

रे गन्धी ! इहि काल में, अतर दिखावत काहि
परखि यन्त्र सों कहत यों, वीटैमिन इहिं नाहिं

दादा सुख लहि भीम बनि, बहू मलति मुख क्रीम
पितु बीमा-स्कीम में, सुत लखि किरकट टीम

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित हुआ न कोइ
तीन हरफ़ 'बेसिक' रटत, असली पण्डित सोइ

कहाँ कुल्हाड़ीलाल हैं, कहाँ बिहारीलाल
तजि अब सब कविवरन को, पढ़हु मदारीलाल

श्यामलालजी शुक्ल में, नाम रहस्य अपार
तीन रङ्ग तहँ रमि रहे, श्वेत, श्याम, रतनार

हुकम पाइ, डाक्टर दई, ऊपर रपट तुरन्त
'ऑप्रेशन' सब सफल हैं, रोगी मरे परन्तु

ब्रजबासी सों प्रेम करि, पिता बने ब्रजधाम
सुत पिकनिक में फँसि रहे, 'बृज' में कीन्हों नाम

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय
बधिर-आँधरो कोटिपति, गोद बिठाओ मोय

कहा करौं बैकुण्ठ लै, कल्पवृक्ष की छाँह
यहाँ 'वोट' तो मिलि गयो, वहाँ पतौ कछु नाहिं

वे रहीम दर-दर फिरैं, माँगि मधुकरी खाहिं
होति दसा, एजँट कहत जो बीमा न कराहिं

'डेम' 'फूल' में सबद दुइ, आपस में प्रतिकूल
साहब के जो 'डेम' हैं, 'मैडेम' के वे 'फूल'

सूर सूर तुलसी ससी, उड़गण केसवदास
कवि - सम्मेलन अब भये हंडा-गैस प्रकास

अजगर करैं न चाकरी, पंछी करैं न काम
सोसलिस्ट यों कहत हैं, दोनों नमकहराम

अपनी-अपनी ठौर पर, सबको लागै दाव
नर्स-डाक्टर प्रेम-नद, रोगी को सिर नाव

पहिरि घाँघरा, चूनरी, नाचति बाला भौन
कनवोकेशन माँहि पिय, पहिरि चले हैं गौन !!

निकट रहे आदर घटै, दूरि रहे दुख जोउ
'सम्मन' बिचली राह गहि, बनि त्रिसंकु अब सोउ

ट्रङ्क-काल दिन भर करत, पूँछत रहत सँदेस
जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे बिदेस

उड़ी गुड़ी लखि लाल की, अँगना अँगना माँहि
कहति बाल 'न्यूसेन्स' यहि, रोकत क्यों इहि नाहिं

साहब के दरबार में दो की चलती दौर
इक बीबी के जोर हैं, इक बीबी के चोर

ताती बातैं तैं करीं, सीरे ह्वै गए स्याम
'हार्ट फेल' डाक्टर डरैं, काम न होय तमाम

कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय
लाउडस्पीकर लाइहौं, तब तुम अइहौ धाय

थोरेई गुन रीझते, बिसराई वह बानि
तुम हूँ कान्ह मनौ रखहु एम० ए० पै ही ध्यान

झूँठ बकैं, बकझक उठैं, रहैं लगाए कान
चुगल चबाई अब बने पाकिस्तानी 'डान'

बटबारे के कमिश्नर, राष्ट्र-संघ की बेलि
बैरी मारे दाँव दै, ये मारैं हँसि-खेलि

'सम्मन' चहु सुख आजु जो राखो घर ये चार
खादी, गादी, प्रेस, अरु, इक काँग्रेसी यार

लम्बी डोरी प्रेम नव फैसन बाँधति दोय
बीस बरस पुचकारि कहुँ, 'डियरी' नियरी होय

कहा करौं कैसी करौं, सुरति बिसारी नाहँ!
कहत वकील, 'चलों तुरत, न्यायालय की राह'!

नाह गरजि नाहर गरज, बोलि सुनायौ टेरि
पढ़त 'शृंखला की कड़ी' लीन्हौं मुख झट फेरि

इन दुखिया अँखियान को सुख सिरजोई नाहिं
दो-दो ऐनक चढ़त चख, बिन ऐनक न दिखाहि

कहना था सो कह दिया, और कहा नहिं जाय
भय है कहीं न रेडिओ, यही बात दुहराय
मेरे औगुन अनगिनत, गनौ न गोपीनाथ
सुमिरि नाम, तव ध्यान धरि, तब कहुँ मारौं हाथ

सोरठा

मैं सांच्यो निरधार, यह जग काँचो काँच सो
'अवसरवादी यार', प्रतिबिम्बित लखियत यहाँ
'रहिमन' मोहि न सुहाय, मोटर बिन पैट्रौल के
कूपन घटि-घटि जाय भभरि-भभरि चलि-चलि रुकै
होतु लली को ब्याह, फूली-फूली माँ फिरति
बाला दुखी कराह, हारी टैनिस-मैच कल !!
मोकों देहु बताय, पुत्र-प्रेम अधिकाय कब ?
बोली सो मुस्काय, जब मसीन सन्तति जनै
'व्यर्थ बजाबन गाल' छात्र-संघ कब समझि है ?
कनवोकेशन हाल, जब कुल-गुरु भाषण पढ़ैं

भैंस या गाय ?

भैंस बड़ी अति होत, डील में दूनो आकर !
क्या है कपिला गाय, बिचारी छोटी चाकर !!
भैंस-दूध पी शक्ति लेहु, तुम कूदो रन में !
ढैंक-रूप नहिं गिनै, नदी-पर्वत निज मन में !!
फिर हूँ न गरव, अति शान्ति सों, ताल माहि यहि लोरती।
आनन्द-कन्द के रहस-रस, मन-मतङ्ग को बोरती !!
शान्ति और बल लेहु, बुद्धि छोड़ो मण्डी में !
शत्रु बड़े, अँखिमूद, कूद अब रणचण्डी में !!
'बि.डुक' 'बि.डुक डकरात, सीख 'बेसिक' अँग्रेजी
रौंदि रूँदि सब चलै, दौड़ दौड़े चङ्गेजी !!
देखत न सामुहैं नेकहू, सीस खेजड़ी हींसिया !
बैताल कहै बिक्रम सुनौ, सब सों बड़ी जि भैंसिया !!

कुण्डलिया

चन्दा माँगन कों अली, मोटर भईं सवार
पीड़ित-हित नाटक रचैं, नयो नयो सरकार
नयो नयो सरकार, मनहि की मन में राखें
नाना भाँति उपाय जुगति, हिय की अभिलाखैं
कहत चुक़न्दर यार, छाँड़ि अपनो सब धन्धा
पति जू करैं बिहार, श्रीमती माँगैं चन्दा

चन्दा माँगन को चलो, बेटा ख़ुदमुख़्तार
बाप लएँ थैली चले नेता के दरबार
नेता के दरबार, कविन को भेंट चढ़ाई
बची खुची घर आइ, मजे सों चढ़ी कढ़ाई
अरे विधाता ! डार दयो गल कैसो फन्दा
बार-बार हर रोज बीस नर माँगत चन्दा

यू०पी० कौ अब धरत हैं, "ब्रज कौशल" शुभनाम।
राम, कृष्ण, के भगत तजि, महादेव कौ धाम॥
महादेव को धाम, बात अब सिगरी बिगरी।
कैसे भूलौ हाय, हमारी काशी नगरी!!
कहत चुक़न्दर यार, पपीहा-सी पिय 'पी' 'पी'।
रहे पचासन साल रटत हम यू० पी०, सी० पी०॥

डिप्टीगीरी हेतु अब, कालिज में मत जाउ।
सोशल-सरविस कैम्प को, डिपलोमा लै आउ॥
डिप्लोमा लै आउ, बनौ अब लक्कड़हारे।
धुना जुलाहे औ कुम्हार बढ़ई बनजारे!
करत बिदा अब मातु कहत सुत सों यों लिपटी।
खोदि घास तुम शीघ्र बनौ, बेटा अब डिपटी॥

करपात्री महाराज ने ताल दई है ठोंकि।
बड़े यज्ञ के हवन में, मनन दयो घी झोंकि॥
मनन दयौ घी झोंकि, जगत अब सुख सों जीए।
घीउ दही ना मिलै, दूध डिब्बे को पीए॥
कहत चुक़न्दर यार, दुखी भूखे भव-यात्री।
जात चले हम नरक, बचैयो मुनि करपात्री॥

कश्मीरी नहिं कहत अब युक्त-प्रान्त निज धाम !
जन्मभूमि कश्मीर है लेत गरव सों नाम !!
लेत गरव सों नाम, भूलि कें उत्तर सागर
प्रथम बसे जहँ आर्य, करो जिन नाम उजागर
कहत चुकन्दर यार, चल रही अजहुँ बजीरी
सौ सौ बरसें बीत चुकीं तौ हू कश्मीरी !!

नहीं ससीम असीम में, नहीं द्वेत अद्वेत
बंधे नहीं मतवाद में, हम सब की सुधि लेत
हम सब की सुधि लेत, हाथ बढ़ि बढ़ि के मारें
एक झपट दिखराय, बड़न को पार उतारें
किन्तु रहत सब द्वेष विना, डारे गलबाँही
हँसी खुशी में कहत उचित अनुचित कछु नाही

करियो मत कछु भूल तुम, आर-अस-अस में जाइ
हिन्दू - सेना - शक्ति में, उत्तम यहि ठहराय
उत्तम यहि ठहराय, संघ के नेता ज्ञानी
हिमगिरि चढ़ि, जग टेरि सुनावें राम कहानी
मातु कहत समुझाय, अरे सुत धीरज धरियो
एक 'ऐस' ही भलो, डबल का मोह न करियो

मन्त्री-मण्डल बनि रहे, भारत में सब ठौर
प्रजातन्त्र की मचि रही, खूब धूम चहुँ ओर
खूब धूम चहुँ ओर, बुद्धि विद्या नहिं तोलैं
गिनि-गिनि कै बलिदान, मिनिस्टर बनि अब डोलैं
परमारथ की राग बजावैं सब हिय-तन्त्री
स्वाँग दिखाइ, डराइ, बनैं षड्यन्त्री मन्त्री !

चित कब रीझतु है सखे, पत्र-पत्रिकन माँहिं
सम्पादक की कतरनी, सारद - सेस सराहिं
सारद - सेस सराहिं, लेख को छोटो करिबो
कागद-कमी बताइ, सार थोरे में धरिबो
सिर न पूँछ; नहिं भाव; भावना बिगरी सबरी
कटि छँटि, इत उत, हाय, बनी कविता चितकबरी।

पोलिटिकल मीटिंग हुई; हम भी पहुँचे जाय
अमरीका अरु रूस को, गालीं दईं अघाय
गालीं दईं अघाय शान्ति-सन्देश लिखायो
तर्क-युक्त प्रस्ताव पास करि, जग बटवायो
कहत चुकन्दर यार, आज की मीटिंग होली
बातें बिलकुल ठोस, किन्तु सब रचना पोली।

नानी बुढ़िया चल बसीं कोउ न जान्यों मर्म
लीक लीक पर चलि बन्यों, सुन्दर नारी-धर्म
सुन्दर नारी-धर्म, जन्त्र मन्त्रनि को फेरो
रीति रसम उपवास; तपैदिक, तेरो मेरो
अबला जीवन! हाय तुम्हारी यही कहानी
बनी भई आदर्श अजहुँ लौं बुढ़िया नानी!

परमिट प्रसंग

तात ! स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग ।
सो कैसे तुलि सकत है, कपड़ा-परमिट संग ?
प्रविसि नगर लीजै इक परमिट ।
बारह गज लैकें अब मरमिट ॥
मनुज रूप धरि कें हनुमाना ।
परमिट लीन्ह सुमिरि भगवाना ॥
गयो शौप के अन्दर माहीं ।
कपड़ा मिल्यौ न नेक तहाँ हीं ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा ।
'ब्लैक मारकेट' वही कहावा ॥
वैश्य रूप धरि वचन सुनाए ।
मालिक उठि कैं झटपट आए ॥
करि सलाम पूँछत कत रुपिया ।
धीरे बोलो, हैं यहँ खुफिया ॥

पञ्चिस के हैं धोती जोड़ा।
सुनि के अस क्यों तुम मुख मोड़ा॥
तब हनुमन्त कथा कही, परमिट कों दिखराय।
देहु बसन हमकों अबहि, जल्दी सों पहिराय॥
लाला बोले, देखु कपीसा।
परमिट रक्खहु अपने खीसा॥
देहिं बसन बिन परमिट सारे।
लै लेहु कछु अहसान हमारे॥
पञ्चिस को तो जोड़ा बेंचहिं।
सौ रुपया कपड़ा में खेंचहिं॥
हम अब बने मित्र सरकारी।
आयो है यह अवसर भारी॥
बिन परमिट कपड़ा मिलै, लूट सकौ तो लूट।
अन्त काल पछिताउगे, प्राण जाहिंगे छूट॥
भन महँ क्रोध करन कपि लागा।
तब लाला को अन्तर जागा॥
लाला बोले ले मोहि साथा।
मो पै कृपा करहु तुम नाथा॥
सुनहु पवन-सुत रहनि हमारी।
जिमि दसन्हन्हि महँ जीभ बिचारी॥

जो हम नहिं अब तुम सों लेहीं।
अफसर को फिर कहँ से देहीं॥
तासों सङ्ग चलहु तुम गुदरी।
सीता सों लावहु इक मुदरी॥
बेंचि बाहि आधे तुम पाहीं।
आधे सों हम काम चलाहीं॥
सुनि सकोप बोले हनुमनता।
दुष्ट खाइगी तुमको जनता॥
राम भक्त हम; नाहिं नें सहजि सकोगे लूटि।
इतनी पनहीं परैंगी, चाँदि जाइगी फूटि॥
सियावर रामचन्द्र की जय शरणम्॥

एक कविता

शाम को एक दिन, एक प्रसिद्ध कवि की पुस्तक लेकर पढ़ने बैठा तो पुस्तक खुलते ही निम्नलिखित कविता पर दृष्टि गई :—

"शाम को
सिविल लाइन्स की सड़कों पर चल रही
आधुनिकाओं की सुरम्य टोली यह
गाल लाल, अधर लाल, और दसों नख लाल
मूंगे के देश की रंगीली ज्यों तितलियाँ

× × ×

दिन भर का थका श्रमजीवी मैं
काम पर से आ रहा
अपने स्वत्वों और जागरूक युग चैतन्य
के प्रति सजग विकासोन्मुख मजदूर मैं
दैवी असन्तोष मेरे जीवन की प्रेरक शक्ति

किन्तु ये नमक की पुतलियाँ
पैदा करतीं रक्त में
कैसी रसभरी झनझनाहट एक
कुछ कुछ बिजली के 'शाक' सी।"

कविता पढ़ने के अनन्तर सहसा हृदय में निम्नलिखित भाव आए :—

शाम को थका मैं आलोचक
पढ़ता हूँ जब यह कवि-वाणी
बरबस निकल पड़ता है मुँह से
झूँठ है झूँठ यह सारी कहानी !
ओफ़ ! तुम तो हो कवि और प्रोफेसर
लेखक, कहानीकार, आलोचक,
और जानें क्या-क्या !!
नारी-सौन्दर्य बनी जीवन की प्रेरक-शक्ति
खामखाँ, अब बनते हो मजदूर
समझा पाठक रहते हैं दूर
पढ़ते हैं कविता होकर नशे में चूर,
क्यों नहीं सच बोलने में रखते कुछ भक्ति ?
तुम मजदूर नहीं; हाँ—मजदूर नहीं;
होगे मजदूरों के वकील या एजेण्ट

'प्रगतिवाद' को ठोक पीट कर करते हो पेटेण्ट
अनमेल तथ्यहीन बातों से
कविता बिगड़ कर होगई है खाक-सी
देखते ही होती है दिल में झनझनाहट
हाँ, कुछ-कुछ बिजली के 'शाक' सी !!

चल रही उसकी कुदाली

जलती दुपहरी में एक किसान को खेत गोड़ते देख कर श्री शिव-मंगलसिंह 'सुमन' ने अत्यन्त ओजस्वी प्रगतिवादी कविता लिखी है। 'प्रलय सृजन' से उस के कुछ अंश यहाँ उद्धृत किये जाते हैं :—

(१)

हाथ हैं दोनों सधे से
गीत प्राणों के रुँधे से
और उसकी मूँठ में विश्वास
जीवन के बँधे से

धकधकाती धरणि थर थर
उगलता अङ्गार अम्बर
भुन रहे तलुवे, तपस्वी सा
खड़ा वह आज तन कर,

शून्य सा मन, चूर है तन
पर न जाता वार खाली
चल रही उसकी कुदाली

(२)

वह सुखाता ख़ून पर-हित
वाह रे साहस अपरिमित
युग युगों से वह खड़ा है
विश्व-वैभव से अपरिचित

जल रहा संसार धू-धू
कर रहा वह वार कह 'हूँ'
साथ में समवेदना के
स्वेद-कण पड़ते कभी चू

कौन सा लालच ? धरा की
शुष्क छाती फाड़ डाली
चल रही उसकी कुदाली

(३)

शान्त सुस्थिर हो गया वह
क्या स्वयं में खो गया वह
हाँफ कर फिर पोंछ मस्तक
एकटक-सा रह गया वह

आ रही वह खोल झोंटा
एक पुटली, एक लोटा
थूंक सुरती पोंछ डाला–
शीघ्र अपना होंठ मोटा
एक क्षण पिचके कपोलों में
गई कुछ दौड़ लाली
चल रही उसकी कुदाली

आँख उसने भी उठाई
कुछ तनी कुछ मुस्कराई
रो रहा होगा लखनवा
भूख से, कह बड़बड़ाई
हँस दिया दे एक हूँठा
थी बनावट, था न रूँठा
याद आई काम की--
पकड़ा कुदाली - काष्ठ-मूठा
खप्प-खप चलने लगी
चिर-संगिनी की होड़ वाली
चल रही उसकी कुदाली

(५)

भूमि से रण ठन गया है
वक्ष उसका तन गया है

सोचता मैं, देव अथवा
यन्त्र मानव बन गया है

शक्ति पर सोचो जरा तो
खोदता सारी धरा जो
बाहु-बल से कर रहा है
इस धरणि को उर्वरा जो
लाल आँखें खून पानी
वह प्रलय की हो निशानी

नेत्र अपना तीसरा क्या
खोलने की आज ठानी
क्या गया वह जान-
शोषक-वर्ग की करतूत काली
चल रही उसकी कुदाली

कविता पढ़कर प्रगतिवादी काव्य के सम्बन्ध में जो भाव आए इस प्रकार थे—

(१)

काव्य से रण ठन गया है
झुलस सारा मन गया है
देख लो साहित्य सारा
प्रगतिवादी बन गया है !!

प्रगति क्या ? सोचो जरा तो,
उलट दे सारी धरा जो !
जीभ मे ही कर सके
बंजर धरा को उर्वरा जो !!

मिली बैलों को न सानी
लखनवा की मरी नानी
बन्द हुक्का और पानी
कृषक ने तब हार मानी;

'सुमन' ने कविता सुना,
उसके हृदय में जान डाली
चल रही उसकी कुदाली

(२)

शान्त सुस्थिर हो गया वह
काव्य सुनकर सो गया वह
गए चोरी बैल तब तक
बिना खेती रो गया वह

कुदाली का काष्ठ-मूठा
हाथ मे फिर लूट टूटा
कृषक ने समझा
पुराना देवता ही आज रूठा

देख हालत कवि-नयन से
उमड़ कर बह चला पानी
कण्ठ से ही भूमि को तब
जोतने की खूब ठानी

खप्प-खप चलने लगी
फिर लपलपाती जीभ खाली
चल रही उसकी कुदाली !

(३)

रच रहे हैं काव्य पर-हित
वाह रे साहस अपरिमित
जन्म शहरों में हुआ
पर गाँव से ही रहे परिचित !

भूँख के मारे कृषक ने
आँख अपनी डबडबाई
छोड़ उसका ध्यान कवि ने
लेखनी अपनी उठाई

प्रगतिवादी मञ्च पै चढ़
काव्य में जादू टटोला

वर्ग शोषक के सिरों पर
फेंक मारा वज्र - गोला

भूख उसकी बुझ गई जब
काव्य सुन कर पिटी ताली
चल रही उसकी कुदाली !

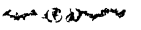

मेरे कविवर ! मत मान करो

[अप्रैल १९४५ में एक कवि-सम्मेलन में कई नवयुवक लोक-प्रिय कवि सम्मिलित नहीं हुए। तब यह छन्द लिखे गए थे। यह छन्द वास्तव में पैरोडी नहीं हैं, पर व्यंग्य और हास्य न होते हुए भी यह पद्य केवल इसलिए 'पैरोड्यावली' के अन्तर्गत रक्खे गए हैं क्यों कि अन्तिम चरण श्री माखनलालजी चतुर्वेदी के "मेरी रानी मत मान करो" का रूपान्तर-मात्र है।]

(१)

स्वप्रिल-नभ के नक्षत्र नव्य !
साहित्य-सुमन के आत्म-दान !
तुम डूब-रहे-दिनमान प्रान के
अरमानों की नवल तान !!

तुम मानस के प्रतिभा-रूपी
शशि-किरणों की पुलकित आशा !

[इक्यावन

जीवन तरु की कोमल शाखा के
नव पल्लव की परिभाषा !

तुम परम पुरातन संस्मृतियों की
दग्ध-चिता के अहङ्कार !
जल करके राख बने इतिहासों के
हो अन्तिम संस्कार !!

तुम पूर्व-पुरातन, नवनूतन के,
धूमिल, अरुण, सांध्य जीवन !
दिन-रजनी पूरब-पश्चिम के
कोमल-कठोर कटु-मधुर मिलन !!

तिमिरावृत-तमनिधि रजनी के
अन्तिम क्षण में फूटे प्रभात !
तुम ढहते खँडहर की नीवों पर
नई नींव के सूत्रपात !!

है मार्ग तुम्हारा कठिन; किन्तु
निर्दिष्ट इष्ट शुभ कल्याणी
जनता के कवि ! कर दो कविवाणी
नवयुग की वीणा-पाणी !

तुम में अशक्त की शक्ति भरी
निश्चय उस पर अभिमान करो

उत्सुक जनता के सम्मानों का
पर मत तुम अपमान करो!

तुम मत कुछ सोच-विचार करो
भूले, व्यतीत, संस्मरणों पर
मेरे कविवर! अब तो समझो
जनतन्त्र तुम्हारे चरणों पर!!

(२)

तुम शब्द सृष्टि के विधि, हरि, हर,
भाषा-सर के मंजुल मराल
तुम ललित कल्पना-सागर में
चुनते रहते मुक्ता - प्रवाल!

ऊषा की कोमल किरणों की
मृदु-हास सदृश कविता मनहर
मधु अभिनय प्रेमालाप सदृश
सम्मिलित किया संगीत अमर

अति क्रूर काल-द्वारा-प्रहार—
अन्तस्तल की चोटें विसार
नैराश्य-श्याम मेघों में तुम
चमकाते रहते रजतधार!

नव भावों का ताना बुनकर
जब रंग-मंच पर आते हो
जब मादक तान सुरीले स्वर में
नव - रस - धार बहाते हो

भावुक नर तब बलि-बलि जाते
भावुक उर जीवन-रस पाते
भावुक उर तब मादक मस्ती में
झूम - झूम कर लहराते

सुनते - सुनते खोते अनेक
विस्मृति - सागर में डूब - डूंब
इक सहस ज्वार-भाटा के अनुपम
दृश्य दिखाते हैं अपूर्व

यह भावुक उर सङ्केतों पर
डग-मग हो उठता बार-बार;
बढ़ कर, चढ़ कर, गिर कर, मिटकर
बतलाता तुम को कर्णधार!

शत - शत प्राणी हो मंत्र-मुग्ध,
मिटते सुन्दर अवतरणों पर
मेरे कविवर! मत मान करो
वे पड़ें तुम्हारे चरणों पर!

जब तुम कहते "वह खूब लड़ी
मर्दानी झाँसी की रानी"
तब मैं सन सत्तावन में जा
बन जाता सैनिक अभिमानी

इंगित करके जब बतलाते
"ठक पक, ठक पक, ठक पक घोड़ी"
तब मन्द भाग्य की मन्थर गति
परिवर्तित हो चलती दौड़ी !

'उलझन' 'उलझन' कह बार-बार
हाथों से उलझन उलझाते
मैं थक जाता अपनी हृत्—
तंत्री के तारों को सुलझाते !!

जब ऊपर, नीचे, इधर, उधर, निज
हाथ उठा समझाते हो
तब आदि-प्रवर्त्तक नाट्य-शास्त्र को
नत - मस्तक कर जाते हो !!

ऊपर को हाथ उठाकर जब
दिखलाते "विप्लव के बादल"

दिल में धड़कन होने लगती
अनुभव कर तूफ़ानी हल चल !

मधु-शाला नाटक - शाला में
जब प्याला भर बनते ज्ञानी !
तब मादक - द्रव्य-निषेध-नियम—
को मैं बतलाता नादानी !

तुम रोते तो मैं रो उठता
तुम हँसते तो मैं हँस जाता
बहु रूप - रंग - रंजित जाली में
अनायास ही फँस जाता

बलिहार हुआ यह हृदय
भाव, अनुभाव, विभाव, विवर्णों पर
मेरे कविवर ! अब बना पुजारी
पड़ा तुम्हारे चरणों पर !

(४)

तुम पूँजीपति की आश और
श्रमिकों के भी मधुमास, सखे !
तुम दीन मलीन क्षीण कृषकों
के साधक की अभिलाष, सखे!

तुम शृङ्गारी के हास्य, भव्य—
भवनों के शरदाकाश, सखे!
पुलकित प्रमुदित कोमल वाणी के
चञ्चल कला-विकास, सखे!

जीवन के ज्वलित प्रदीप और
सामाजिक प्रेरक शक्ति सखे
तुम भक्ति-मयी, अनुरक्ति-मयी
मानव की शुचि आसक्ति, सखे!

तुम शान्ति और विश्रान्ति, सखे!
तुम क्रान्ति और उद्भ्रान्ति, सखे!
श्री सुख-सौरभ की कान्तिमयी
कविता-कामिनि के कान्त, सखे!

तुम विश्व-निकाई विधि-निपुणाई
भूत भविष्यत् की झाँकी
तुम वर्त्तमान अभिनय रहस्य की
सजग मूर्त्ति की छवि बाँकी!

युग-धर्म समझ, कवि कर्म समझ,
जग-पृष्ठ-भूमि तो दिखलाओ
भारत के भाग्य-विधाता! या,
नवयुग के निर्माता! आओ!

गुण गाते - गाते हार चुका
आकर जीवन संचार करो !
प्राणों का दीपक राग जला,
नूतन आलोक प्रसार करो !

अब तो तुम जरा तरस खाओ
जनता के उत्सुक कर्णों पर
मेरे कविवर ! मत मान करो
मैं पड़ू तुम्हारे चरणों पर !!